विषय - सूची

अध्याय 1—ऐतिहासिक स्रोत पृ. 1-33

पुरातात्विक स्रोत, ताम्र-पत्र, सनद, रुक्के, फरमान, राजकीय पुरा संग्रहालय, फॉरेन डिपार्टमेन्ट कन्सलटेशन्स, राजकीय पुरा संग्रहालय बीकानेर—खरीता, ड्राफ्ट खरीता एण्ड परबाना, अर्जदाश्त, अखबारात, वकील रिपोर्टस्, परवाना, आमेर रिकॉर्ड, दस्तूर कौमवार, हकीकत बही, ओहदा बही, खास रुक्का बही, अर्जी बही, खरीता बही, अन्य राज्यों के पुरालेख विभाग, व्यक्तिगत संग्रह। साहित्यिक स्रोत—संस्कृत, राजस्थानी, वंशभास्कर। ख्यातें—नैणसी की ख्यात, जोधपुर राज्य की ख्यात, दयालदास की ख्यात, मुण्डियार ठिकाने की ख्यात, कविराजा की ख्यात, फारसी ग्रन्थ, चित्रकला, अन्य साधन।

अध्याय 2—पूर्व मध्यकालीन राजस्थान पृ. 34-74

चौहानों का अभ्युदय, प्रारम्भिक चौहान शासकों का उत्कर्ष, पृथ्वीराज चौहान तृतीय का जीवन, साम्राज्य विस्तार; दिग्विजय नीति—चंदेल राज्य पर विजय, चालुक्य-राज्य पर अभियान, चौहान-गहड़वाल शत्रुता एवं कन्नौज-आक्रमण, तुर्क-विरोध, तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)—द्वितीय युद्ध (1192 ई.), पृथ्वीराज की हार के कारण, पृथ्वीराज का व्यक्तित्व, पृथ्वीराज चौहान के बाद राजस्थान, राजपूतों द्वारा उत्थान के प्रयास, हम्मीर चौहान की दिग्विजय, अलाउद्दीन खलजी का चित्तौड़-अभियान, सिवाना-आक्रमण, जालौर-आक्रमण, राजपूतों की हार के कारण।

अध्याय 3—उत्कर्ष काल पृ. 75-99

महाराणा कुम्भा, बून्दी, गागरौन, सिरोही-अभियान, मारवाड़ से सम्बन्ध, पूर्वी राजस्थान का संघर्ष, अन्य विजयें, मालवा-गुजरात से सम्बन्ध, मेवाड़-मालवा प्रथम संघर्ष, माँडलगढ़ का दूसरा घेरा, चित्तौड़-आक्रमण, अजमेर-माँडलगढ़-अभियान, मेवाड़-गुजरात सम्बन्ध, मेवाड़ पर पुनः आक्रमण, सांस्कृतिक उपलब्धियां, वास्तुकला, साहित्यानुरागी, कुम्भा का देहान्त, कुम्भा के बाद मेवाड़, महाराणा साँगा, प्रारम्भिक कठिनाइयाँ, मालवा, युद्ध, गुजरात, साँगा व इब्राहीम लोदी।

अध्याय 4—मुगल प्रसार एवं राजपूत प्रतिक्रिया (1526 ई.-1615 ई.) पृ. 100-199

युद्ध के कारण, राणा का प्रस्थान, बाबर का प्रस्थान, सैनिक संख्या, समझौते का प्रयत्न, राणा की हार के कारण, परिणाम, साँगा की मृत्यु, —व्यक्तित्व, साँगा के पश्चात् मेवाड़ की स्थिति, विक्रमादित्य का राणा बनना, बहादुरशाह का आक्रमण, चित्तौड़ का घेरा, राव मालदेव, भाद्राजूण, नागोर, मेड़ता व अजमेर, सिवाना व जालोर, बीकानेर पर अधिकार, मालदेव के हुमायूँ से संबंध, मालदेव व शेरशाह, राजस्थान में अन्य उपलब्धियाँ, 1562 ई. की आमेर-संधि, उदयसिंह व अकबर, बून्दी-मुगल, नागोर-दरबार, चन्द्रसेन और अकबर, गृह कलह, मुगलों का जोधपुर पर अधिकार, चन्द्रसेन का अकबर के पास जाना, शाही सेना की चढ़ाई, मूल्यांकन; प्रताप व अकबर, मेवाड़ की दशा, शिष्ट मण्डल के प्रयास, मानसिंह की नियुक्ति व प्रस्थान, हल्दीघाटी का युद्ध, महत्व, युद्ध नीति में परिवर्तन; अकबर का पुनः प्रयास, क्या प्रताप ने अकबर से संधि न कर भूल की ? मूल्यांकन। अमरसिंह व मुगल—महावतखां का मेवाड़ पर आक्रमण, अब्दुल्लाखां का मेवाड़ आगमन, खुर्रम का मेवाड़ अभियान, संधि-वार्ता, महत्व, मूल्यांकन, बीकानेर का महाराजा रायसिंह, आमेर का मानसिंह।

अध्याय 5—सहयोग से संघर्ष (1616 ई.-1707 ई.) पृ. 200-257

राजस्थान-मुगल (1616 ई.-1656 ई.), मुगल उत्तराधिकार संघर्ष में राजपूत शासकों का योगदान (1657 ई.-1660 ई.), जसवन्तसिंह जोधपुर पहुंचा, हार के कारण, खजवा का युद्ध, दारा और जसवन्तसिंह, दौराई का युद्ध, मेवाड़, आमेर, बून्दी-कोटा, बीकानेर का योगदान, राजसिंह और औरंगजेब, राठोड़ समस्या (1678-1707 ई.), महाराणा राजसिंह का व्यक्तित्व एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां। अकबर का विद्रोह व अन्त, मेवाड़-मुगल संधि, दुर्गादास का मराठा सहायता प्राप्त करने का प्रयास, मुगल-मारवाड़, राजस्थान का केन्द्रिय शक्ति के विरुद्ध विद्रोह (1708-1710 ई.), त्रिशासकीय सम्मेलन, जसवन्तसिंह का चरित्र एवं उपलब्धियाँ, दुर्गादास।

अध्याय 6—मराठा-युग पृ. 258-293

मराठा प्रसार और राजपूत प्रतिरोध (1710-1760 ई.)

मराठा-आक्रमणों को रोकने का प्रयास, बून्दी-समस्या, हुरड़ा-सम्मेलन, असफलता के कारण, मुगल अभियान और राजस्थानी शासकों का योग-

दान, बाजीराव की राजस्थान यात्रा, नादिरशाह का आक्रमण, सवाई जयसिंह का व्यक्तित्व, जयपुर उत्तराधिकार संघर्ष, जोधपुर में आन्तरिक संघर्ष (1749-60 ई.), मेवाड़ में गृह युद्ध, राजस्थान में मराठा-प्रसार (1760-1782 ई.)।

अध्याय 7—संधियों का युग (1810—1818 ई.) पृ. 294-305

पिंडारी-मराठा उपद्रव, सामन्तों का रुख, अंग्रेजों की आवश्यकता, कोटा, गुप्त संधि, जोधपुर, मेवाड़, जयपुर।

अध्याय 8—1857 के विद्रोह में राजस्थान का योगदान

पृ. 306-315

क्रांति के कारण, विद्रोह का प्रारंभ, तांत्या टोपे का राजस्थान में आगमन, असफलता के कारण, परिणाम।

सांस्कृतिक परम्परा

अध्याय 1—पृ. 1-116

सामाजिक जीवन (पृ. 1-18)—वर्ण एवं जाति-व्यवस्था, अंतर्जातीय सम्बन्ध, संयुक्त परिवार-व्यवस्था, संस्कार, दास-प्रथा, पोशाक एवं वस्त्र, आभूषण एवं शृंगार, खान-पान, स्त्रियों की दशा, सती प्रथा, अंध विश्वास, आमोद-प्रमोद के साधन, त्यौहार एवं उत्सव। धार्मिक जीवन (पृ. 18-45)—जैन धर्म, इस्लाम, भक्ति आन्दोलन—जाम्भोजी, निरंजनी सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, मीरांबाई (पृ. 26-32), लालदासी सम्प्रदाय, दादू पंथ (पृ. 32-38), संत दरियावजी, संत रामचरण, संत हरिरामदासजी, संत रामदास, चरणदासी सम्प्रदाय, लोक देव। स्थापत्य कला (पृ. 45-71)—गाँव एवं नगर, किले—चित्तौड़, कुम्भलगढ़, आबू, तारागढ़ जालोर, सिवाना, आमेर; मन्दिर—देलवाड़ा, राणकपुर; भवन, जलाशय एवं उद्यान, समाधि-स्मारक। चित्रकला (पृ. 71-93)—मेवाड़, नाथद्वारा, मारवाड़, बीकानेर, बून्दी, कोटा, जयपुर, किशनगढ़, अलवर। शिक्षा एवं साहित्य (पृ. 93-116)—शिक्षा के विभिन्न केन्द्र, पोषाक, आयु एवं छुट्टियाँ, परीक्षा प्रणाली, शिक्षा के विषय एवं उपाधियाँ, स्त्री शिक्षा, शिक्षक एवं शिष्य के सम्बन्ध, मुस्लिम शिक्षा, पुस्तकालय व्यवस्था, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा, ईसाई मिशन स्कूल; राजस्थानी भाषा एवं लिपि, साहित्य, राजस्थान के साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियां—भाषा की दृष्टि से वैविध्य, साहित्य रूप, संस्कृत-प्राकृत साहित्य, अपभ्रंश साहित्य, पद्य साहित्य, मुक्तक काव्य, गद्य साहित्य, पिंगल साहित्य, लोक साहित्य, चारण साहित्य, चारण मुक्तक काव्य, जैन साहित्य, संत साहित्य, साहित्य संरक्षण की परम्परा।